অভিসরণ
A Multilingual International Peer-Reviewed Research Journal
Volume 1, Issue I, January 2026, PP. 63-68
www.abhisaron.com
ISSN-3139-4027

मन्नू भंडारी की कहानियों में मूल्य बोध

Rakesh Kumar Choubey
Teacher, Department of Hindi, Midnapore College (Autonomous),
West Bengal, India

'मूल्य' शब्द संस्कृत की मूल धातु में यत् प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी आदि होता है। किसी वस्तु के लिए दी गई कीमत, दाम, पूँजी की मूल्य कहते है। 'मूल्य' वेतन या मजदूरी का पर्यायवाची भी स्वीकार किया जाता है।

आज 'मूल्य' शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा है, अब वह ' मानदण्ड' के आर्थ को भी अभिव्यक्त कर रहा है । मानव जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'मूल्य' मनुष्य की सांस्कृतिक पूँजी है जिससे
समाज का स्तर ज्ञात दोता है।

'मूल्य' समाज की वह आधारशिला है जिस पर सभ्यता और संस्कृति का भव्य प्रासाद निर्मित होता है । इन मूल्यों का निरूपण साहित्य की आवश्यकता है, साहित्य में मूल्य का विशिष्ट अर्थ है ।

मूल्यों की उत्पत्ति के लिए द्वैत अनिवार्य है पूर्णता में मूल्यों की स्थिति तो दूरा मूल्यीय चेतना भी नहीं हो सकती । कहने का अर्थ यह है कि अपूर्ण में पूर्णता की लालसा मूल्य चेतना अर्थात तत्सम्बद्ध प्रक्रिया का मूल है ।

आज सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में मूल्य बहुप्रचलित शब्द है। साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्य की विवेचना के लिए, इसे स्वतंत्र विज्ञान का स्वरूप प्रदान किया जाने लगा है।

मूल्यों का संबंध समाजशास्त्र से है। वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक,दार्शनिक, आर्थिक और राजनैतिक विचारधाराएँ समाज में ही अस्तित्व प्राप करती है, क्योंकि अंततः इन सारी विचारधाराओं का निर्माणकर्त्ता समान है।

मानवीय संबंधों, विचार धाराओं, मान्यताओं एवम रीति- रिवाजों संबंध किसी न किसी प्रकार मे मूल्यों से जुड़ा है अर्थात् समाज का संचरण मूल्यों एंव नियमों के द्वारा ही होता है, क्योंकि
मूल्यों का अभाव अराजकता की स्थिति है। मूल्य की निर्माण प्रक्रिया अनंत है। किसी

भी विषय पर प्रारंभ में चिंतन होता है, चिंतन से विचार बनते है। विचारों से धारणा बनती है और धारणों से मूल्यों का निर्माण होता है।

मूल्य निर्माण प्रक्रिया की तुलना एक विशाल वटवृक्ष से की जा सकती है, जिसकी एक से कई जड़े फैलती है। पुरानी जड़े विनष्ट होकर नई जड़ों को आगे विकसित करती है । इसी तरह नवीन मूल्यों का विकास प्राचीन मूल्यों की आधारशिला पर ही होता है ।

मूल्य निर्माण में विशिष्ट महापुरूषों का भी योगदान है। इनके चिंतन, आदर्श विचार भी आगे चलकर मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए । इनके प्रमुख है - मार्क्स, फ्रायड, डार्विन एवं गांधी जिन्होंने आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति को जन्म दिया ।

मूल्य मानव समाज को अस्तित्व प्रदान करने वाला रीढ़ है, इससे संस्कृति एवं सभ्यता के विकास के आयाम स्पष्ट होते है, क्योंकि मूल्य कुछ सामान्य आदर्श, लक्ष्य या नीतियों को सामाजिक जीवन में प्रतिष्टित करते हैं जिसके फलस्वरूप सामाजिक संघर्ष की संभावनाएँ या सामाजिक जीवन की अनिश्चितताएं कम हो जाती है ।

वर्तमान परिवेश में वैज्ञानिक प्रगति पूँजीवादी अर्थव्यवस्था जीवन की यांत्रिकता, अति औधोगीकरण के कारण परम्परावादी

मूल्य नकारे जा रहे है ।बढते हुए आर्थिक दबाव के कारण नारी भी उपार्जन के लिए आगे आ रही है। जिससे उसके अन्दर नई चेतना या नया व्यक्त्वि उभर कर सामने आ रहा है, जिससे स्त्री-पुरुष के आपसी संबंध बदल रहे है, प्रेम एंव यौन संबंध की परिभाषा बदल रही है परिवार के संबंध भी परिवर्तित हो रहे है । अतः स्वतंत्र भारत में बुद्धिजीवी वर्ग के सामने जीवन एक बड़ी चुनौती है, जिसमें जीवन की रिक्तता, अजनवीपन, कुठा, संत्रास, अलगाव आदि का समावेश है, जिस समय से आज की पीढी गुजर रही है वह मूल्यों की द्रष्टि से

काफी सोचनीय विषय है ।

व्यक्ति समाज में ही अपनी व्यथा को झेल सकने के लायक स्वयं को अनुभव करता है । उसके जीवन का अकेलापन ही जीवन की त्रासदी बन जाती है । इस यथार्थ अनुभूति को इतने व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जीवन की गहराइयों के साथ सूक्ष्म रूप में अभिव्यक्त कर देना मन्नू भंडारी के अलावा कोई अन्य कहानीकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में न ऐसा कर सकता है और सोच सकता है । व्यक्ति के जीवन मूल्यों को सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों और नैतिक मूल्यों के साथ उसकी मार्मिकता की व्याख्या मन्नूजी ने अपनी कहानियों में की है।

आधुनिकता के पूर्व समाज का व्यक्ति रूप में स्थान गौण था। उसे जन्म के साथ धर्म, समाज और जाति की अनेक परम्पराएं विरासत में मिलती थी, किन्तु वैज्ञानिक चिंतन

के फलस्वरूप आधुनिक जीवन दृष्टि ने 'व्यक्तिवादी मूल्यों' को प्राक्ष्य दिया ।
आज व्यक्ति को इतना अवकाश ही नही कि समाज सापेक्ष मूल्यों की आवश्यकताओं में सहयोग करें। इसके साथ ही व्यक्ति के अहम की प्रवृत्ति समाज, संस्कृति और ईश्वर के प्रति विद्रोह करती है ।
आज समाज टूटता दुआ प्रतीत हो रहा है, मन्नू भंडारी की कहानी 'अकेली ' में सोमा-बुआ अपने संपूर्ण आयुष्य में मातृत्व एंव आर्थिक अभाव की पीड़ा से जूझ रही है । वह पास – पड़ोस के कार्यों में व्यस्त रहना पसन्द करती है, परन्तु अपने ही परिचित के यहाँ न बुलावा आने के कारण सोमा बुआ पुन: अकेली पड़ जाती है।
वही ' ईसा के घर इंसान' कहानी में धर्म के अति कठोर नियम, संयत व्यक्ति को विद्रोही बना देते है । इसी प्रकार 'जीती बाजी की हार' में व्यकिवादी जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा नारी चरित्र मुरला के माध्यम से प्रयास हुआ है ।
'शायद' कहानी में जहां यांत्रिक जीवन के साथ पारिवारिक जीवन का संबंध दर्शाया गया है, वहीं 'एक इंच मुस्कान' में रंजना और अमर के दामपत्य जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत है।
'ए खाने आकाश नाई' जहाँ टूटते, बिखरते ; घुटन, अलगाव और द्वेष से जकड़े ग्रामीण एवं शहरी परिवार की कथा है, वही 'छत बनाने वाली ' कहानी में एक ऐसे संयुक्त परिवार की कथा है, जो परम्परा से जकड़ा हुआ संस्कारों से आबद्ध दकियानूसी खयाल का है ।
वहीं ' त्रिशंकु ' सामाजिक मूल्य और नैतिक मूल्यों की छवि को प्रस्तुत करता है। इसमें माँ, बेटी और पिता तीनों में हम परम्परा से फिर भिन्न चित्र देखते है । पहले तनु को मम्मी काफी छूट देती है, उसके पैर खींच लेती है, ऐसे तरह-तरह के प्रश्न हमारे समक्ष प्रस्तुत है ।
नकली हीरे', 'शायद', 'सजा', 'तीसरा आदमी', 'इनकम टैक्स और नींद' आदि कहानियाँ मूल्य बोध के प्रश्नों को प्रस्तुत
करती है। आज के संदर्भ में परम्परागत तरीके से कहीं न कही परिवारों में एक परिवर्तन की हार्दिक छवि प्रस्तुत हो रही है, और जिसका मूल रूप से अध्ययन कर उसे सामने प्रस्तुत करना ही मन्नू भंडारी की कहानियों का एकमात्र उद्देश्य है ।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट
इंडिया, नई दिल्ली - 16
पहला संस्करण - 2004
पहला आवृत्ति - 2005
दूसरी आवृत्ति - 2008
2. तीन निगाहों की एक तस्वीर- मन्नू भंडारी -
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली - 02
पहला संस्करण-2001
दूसरा संस्करण -2011
पहली आवृत्ति-2014
3. एक प्लेट सैलाब - मन्नू भंडारी
4.राधाकृष्णा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली -02
पहला संस्करण - 2001
दूसरा संस्करण-2011
पहली आवृत्ति-2013
मन्नू भंडारी का कथा साहित्य-डॉ. 'श्रीवास्तव ' अलका
शताक्षी प्रकाशन - रायपुर
प्रथम संस्करण-2014
5. हिन्दी कहानी का विकास-'मधुरेश'
लोकभारती प्रकाशन
अष्टम संस्करण-2016
कोलकाता-17
6. औरो के बहाने - (व्यक्तिव दर्शन)
'यादव' राजेन्द्र
राधाकृष्णा प्रकाशन - नई दिल्ली - 02
दूसरा संस्करण-2014
7. अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया

डॉ . ' पाठक' विनय कुमार
डॉ. 'शुक्ल' (श्रीमती) जयश्री
भावना प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण - 2010
8. शोध प्रविधि
डॉ. शर्मा विनयमोहन
मयूर पेपरबैक्स
चौथा संस्करण-2013
9.मन्नू भंडारी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प
डॉ. 'पटेल' भूमिका
चिन्तन प्रकाशन, हंसपुरम्
कानपुर- 208021
संस्करण- प्रथम- 2012
10. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में नारी
डॉ. 'महाजन ' ज्ञानेश्वर
दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रकाशक एंव पुस्तक विक्रेता)
दंसपुरम्, कानपुर 208021
संस्करण - प्रथम 30 अगस्त 2016
11. कहानी : नयी कहानी
'सिंह' नामवर
लोक भारती प्रकाशन - इलाहाबाद- 1
संस्करण-1999
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास
डॉ. नगेन्द्र
मयूर पेपरबैक्स - नोएडा -201301
तीसवीं संस्करण - 2004
13. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ
डॉ. 'शर्मा' शिव कुमार
अशोक प्रकाशन-नई झड़क, दिल्ली 06
अठारहवाँ संस्करण - 2006

CC BY NC